संडे नवभारत टाइम्स
पंजीयन क्रमांक एमएच/एमआर/साउग-108/2006-08, आर. एन. आई. पंजीयन नंबर 1613/57
मुम्बई, रविवार, 20 जुलाई, 2008, मूल्य तीन रुपये

फिर उसी वर्कशॉप में अटकी कार की कहानी

मुम्बई (न.प्र.)। 'तीन महीने बाद भी नहीं मिल पाई अपनी कार' खबर के सिलसिले में शनिवार को एनबीटी कार्यालय में कई बार फोन की घंटी घनघनाई। कुछ तो खबर के बारे में जानना चाहते थे, तो कुछ भुक्तभोगी हरीश कंचन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बहुराष्ट्रीय मोटर कार निर्माता कंपनी और उसके अधिकृत डीलर्स द्वारा किए जा रहे शोरखधंधे के खिलाफ छेड़ी गई मुहिम में शामिल होना चाहते थे। हरीश की कहानी की अगली कड़ी आर्डन रोड स्थित नानिक निवास भवन में रहने वाले रमेश अग्रवाल से जुड़ती है, जो उसी मोटर निर्माता कंपनी की उसी वर्कशॉप द्वारा ठगे गए हैं।

वकील रमेश 2006 में उन्होंने अपनी नेवी ब्लू कलर की स्कोडा ऑक्टेविया राइडर (एमएच 04 1411) अपनी बेटी रुचिका पुरा के नाम से खरीदी थी। टैंकर से टकराए गाड़ी के गेट की मरम्मत कराने के लिए जब वे चेम्बूर स्थित न्यूमर इन्स वर्कशॉप पहुंचे तो उनसे 12 हजार रुपए का खर्च बताकर वर्कशॉप मैनेजर द्वारा एक हफ्ते बाद आने के लिए कहा गया। एक हफ्ते बाद जब रमेश वर्कशॉप पहुंचे, तो डोर मिरर में क्रैक और सेट का पैंट करने की बात बताकर 80 हजार का खर्च बताया गया और डेढ़ महीने की मोहलत मांगी गई। डेढ़ महीने बाद जब रमेश ने गाड़ी टेस्ट ड्राइव की तो पेट्रोल कैप टूटा था, ड्राइविंग सीट का कॉच ऊपर नहीं चढ़ रहा था, एसी शॉर्ट थी और सिगरेट लाइटर मशीन भी गायब थी। जब रमेश ने वर्कशॉप में इसकी शिकायत की, तो उनसे कहा गया कि गाड़ी के ये पार्ट पहले से ही गायब थे। मोलेशाम का 500 रुपया जोड़कर अब कैलाश का कुल खर्च एक लाख 60 हजार तक जा पहुंचा। एक बार फिर अपनी डिलीवरी लेने पहुंचे कैलाश को गाड़ी की इस बार गीयर भी जल चुकी थी।

एनबीटी इम्पैक्ट

इन तमाम कवायदों से थककर के बाद जब रमेश की जिंदगी की गाड़ी बिना गाड़ी के गीयर में नहीं आ पा रही थी, ठीक उसी समय उन्होंने अपनी गाड़ी के गीयर भी खराब होने की बात भी वर्कशॉप तक पहुंचाई। वकील रमेश वर्कशॉप के ही एक मेकैनिक ने उनसे घर पर ही गाड़ी ठीक करने की बात गुपचुप तरीके से कही। वजह पूछने पर उसने बताया कि हमारा एक दिन का सर्विसिंग खर्च 12 हजार रुपए है। क्या ठीक हुआ है, क्या नहीं किसे पता है, लेकिन मैं घर पर यह काम 3000 रुपए में ही कर दूंगा। आखिरकार थक-हारकर रमेश ने तीन अप्रैल को 12 लाख लागत वाली कार को 4 लाख में बेच दिया। इन तमाम बातों में दूसरा पहलू तलाशने के लिए जब एनबीटी की तरफ से न्यूमर इन्स के वर्क्स मैनेजर को फोन लगाया गया, तो उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया। हरीश की इस मुहिम में अब रमेश भी शामिल हो चुके हैं।